सकारात्मक विचार आपकी जिंदगी को जरूर सफल बनाएगे।
– अज्ञात

विचार-प्रवाह देहरादून बुधवार 1 जनवरी 2020

पेज थ्री
www.page3news.in

राजनीति अपनी जगह

अपने दायरे में मगन रहने की इस प्रवृत्ति ने ही भारत के किसी पुराने शासक को साम्राज्य विस्तार के लिए कहीं और का रुख करने की जरूरत नहीं महसूस होने दी। इसीलिए भारत की राजनीति में भी लंबी उम्र उदार हिंदुत्व की ही हो सकती है।

आरती सिंह

राजनीति अपनी जगह, लेकिन झारखंड के चुनाव नतीजे में बीजेपी के लिए यह कड़ा संदेश छुपा है कि उग्र हिंदू अजेंडे को भारत में बहुत लंबा नहीं खींचा जा सकता। झारखंड में बीजेपी ने अपने हिंदुत्व अभियान के सारे जुमले दोहराए। गृह मंत्री अमित शाह ने एक चुनावी रैली में चार महीने के अंदर अयोध्या में भगवान राम का गगनचुंबी मंदिर बनाने का वादा भी कर दिया। फिर भी हिंदू वोटरों को वे रिझा नहीं पाए। इससे पहले भी कई राज्यों में बीजेपी के हाथ से सत्ता फिसली। हिंदूवाद का नुस्खा हर जगह बेअसर रहा।

यही वक्त है जब दक्षिणपंथी राजनीति को संभल जाना चाहिए। उसे समझना होगा कि हिंदुओं को अपने धर्म के नाम पर हमेशा आंदोलित–उत्तेजित नहीं रखा जा सकता। यह बात हिंदू स्वभाव के विपरीत है। भगवान राम के चरित्र की व्याख्या के क्रम में कहा जाता है कि वे सम पर जीते हैं। इसका अर्थ है संतुलित रहना, हर स्थिति में समान रहना। न ज्यादा खुश न ज्यादा दुखी। यानी किसी तरह का अतिरेक नहीं। एक आम हिंदू का जीवन भी ऐसा ही है। किसी एक चीज में लंबे समय तक टांग फंसाए रखना उसे पसंद नहीं। वह जीवन में कुछ पाना तो चाहता है लेकिन किसी भी चीज के लिए बहुत हाय–हाय नहीं करता। संतोषम् परम् सुख उसके जीवन का मूल है। उसके धर्म में ईश्वर का स्वरूप भी आक्रामक नहीं है।

बीजेपी भले ही भगवान राम के योद्धा रूप को प्रस्तुत करती आ रही है लेकिन राम का वह स्थायी स्वरूप नहीं है। वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। हथियार उन्होंने विवशता में, लोकमंगल के लिए उठाया। अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने या किसी अन्य निजी स्वार्थ के लिए नहीं। रावण को मारने के बाद उन्हें युद्ध की आवश्यकता ही महसूस नहीं हुई। कृष्ण की लीलाओं में तो मर्यादा का भी कोई आग्रह नहीं है। बचपन से लेकर युवावस्था तक वे प्रेम ही लुटाते रहते हैं। शिव कभी–कभार क्रोधित होते हैं, लेकिन प्रायरू सबको क्षमा कर देते हैं। विश्व को संकटमुक्त रखने के लिए वे खुद जहर पी लेते हैं।

हिंदू धर्म में इतने सारे पर्व–त्योहारों का होना भी इस बात का सूचक है कि इसमें लोग शांतिपूर्वक एक–दूसरे के साथ खुशियां बांटते हुए जिंदा रहने में यकीन रखते हैं। अपने दायरे में मगन रहने की इस प्रवृत्ति ने ही भारत के किसी पुराने शासक को साम्राज्य विस्तार के लिए कहीं और का रुख करने की जरूरत नहीं महसूस होने दी। जाहिर है, हिंदू मूलतरू एक शांतिप्रिय समुदाय है जिसे कभी–कभार गुस्सा दिलाया जा सकता है, थोड़े समय के लिए आक्रामक बनाया जा सकता है, लेकिन फिर उस प्रसंग को पीछे छोड़कर वह सम पर वापस लौट आता है। इसीलिए भारत की राजनीति में भी लंबी उम्र उदार हिंदुत्व की ही हो सकती है। अपनी इसी ताकत के बल पर अटल बिहारी वाजपेयी भारत के हर समुदाय, हर सियासी धारा में समान रूप से स्वीकार किए गए। क्या बीजेपी समय रहते उस रास्ते पर वापस लौट पाएगी?

धार्मिक सद्भाव

धर्म-दर्शन

मनमोहन। आज विश्व भर में ईसाई धर्म के सर्वोच्च इसा मसीह का जन्म दिन क्रिसमस हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है। आज के इस पावन पर्व को बिना भेदभाव किये सभी धर्मों के लोग मनाते हैं और यही पर्वों का सही सन्देश है। यदि हम खुले मन से सभी धर्मों की शिक्षाओं को पड़ें तो उनमें एक सी बातें औरसमानताएं देखने को मिलती हैं। केवल संकीरता के चलते आज हमने मजहब की जो दीवारें खड़ी कर ली है , उससे बढ़ती हिंसा, द्वेष और घृणा से आज विश्व समाज परेशान है। इसा मसीह के सन्देश के अनुसार हम सब एक उच्च शक्ति गॉड के बच्चे है और हम सब में उस उच्च शक्ति का समान अंश विद्यमान है। उन्होंने उस महान सत्य को पाने के लिए अपना जीवन तक कुर्बान कर दिया और सूली पर चढ़ गए। आज का शुभ पर्व खुशी और उल्लास का दिन है जब हमें अपने भीतर देख कर उस परमानन्द को अनुभव करना है और किंगडम ऑफ हैवन का आनंद लेना है।

संपादकीय

तेल आयात पर प्रतिबंध

अमेरिका ने भारत सहित कुल आठ देशों को ईरान से तेल आयात करने को लेकर दी गई छूट खत्म कर दी है। पिछले साल डॉनल्ड ट्रंप ने ईरान के साथ हुआ परमाणु करार रद्द कर दिया था और उसके तेल आयात पर प्रतिबंध लगा दिए थे। लेकिन इस प्रतिबंध से ईरानी तेल के आठ प्रमुख खरीदारों भारत, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान, तुर्की, इटली और यूनान को छह महीने तक की अवधि के लिए छूट दी थी। इससे यह लगा था कि अमेरिका ईरान से अपनी टकराहट का नुकसान अपने मित्र देशों को नहीं होने देगा।

पर अब ऐसा लग रहा है कि उसने हर कीमत पर ईरान को बर्बाद करने का मन बना लिया है। ईरान से तेल के सबसे बड़े खरीदार भारत और चीन हैं। वित्त वर्ष 2017–18 में भारत ने ईरान से 2.26 करोड़ टन कच्चे तेल की खरीदारी की थी, जिसे प्रतिबंध लागू होने के बाद घटाकर 1.50 करोड़ टन सालाना कर दिया गया था। अब यह आयात पूरी तरह बंद होने से देश में ऊर्जा संकट पैदा होने की आशंका गहरा रही है। ऐसा और मुल्कों में भी हो सकता है। कई विशेषज्ञ मानते हैं कि इसका विश्वव्यापी असर पड़ेगा क्योंकि ईरान से तेल निर्यात पूरी तरह ठप होने से दुनिया में तेल की सप्लाई प्रभावित होगी। कच्चे तेल की कीमतों में इससे भारी उछाल आएगा, दुनिया की ज्यादातर अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक असर पड़ेगा। डर है कि इससे विश्व अर्थव्यवस्था कहीं एक और मंदी की चपेट में न आ जाए।

हालांकि विशेषज्ञों का दूसरा वर्ग इससे इनकार करता है। उसके मुताबिक ईरान से तेल सप्लाई कम या बंद होने की स्थिति में दूसरे तेल उत्पादक देशों के बीच बाजार में उसका हिस्सा हथियाने की होड़ शुरू होगी। इसके लिए वे अपना उत्पादन बढ़ाएंगे तो तेल की कीमतें नियंत्रण में आ जाएंगी।

साफ है कि अब गढ़वाली परिवारों के युवा प्रायः सरकारी नौकरी नहीं करते। इसलिए मिंटो रोड से शिफ्ट कर गए गढ़वाली परिवार। दरअसल 1930 के आसपास गढ़वाल से लोगों ने दिल्ली का रुख करना शुरू किया था।

गायब हो गए गढ़वाली नाम

विवेक शुक्ला

देखते ही देखते किसी खास एरिया में आबादी का चरित्र कैसे बदलता है, ये जानना हो तो दिल्ली के राऊस एवेन्यू, प्रेस रोड, जहांगीर रोड, अहिल्याबाई मार्ग और कोटला मार्ग का चक्कर लगाना चाहिए। ये सब मिंटो रोड का हिस्सा हैं। आप समझ लें कि इनमें 90 के दशक के अंत तक गढ़वाल के दर्जनों परिवार रहते थे। हर दूसरे घर की नेम प्लेट पर डबराल, रावत, गुसाई, थपलियाल, बिष्ट जैसे सरनेम लिखे होते थे। ये सब भारत सरकार के मुलाजिम थे। इन देव भूमि वालों ने पर्वतीय रामलीला भी राऊस एवेन्यू में शुरू की थी जो लगभग आधी सदी तक चली। लेकिन अब आप इन इलाकों में जाएं तो गढ़वाली सरनेम वाली नेमप्लेट नदारद मिलेंगी।

साफ है कि अब गढ़वाली परिवारों के युवा प्रायः सरकारी नौकरी नहीं करते। इसलिए मिंटो रोड से शिफ्ट कर गए गढ़वाली परिवार।

दरअसल 1930 के आसपास गढ़वाल से लोगों ने दिल्ली का रुख करना शुरू किया था। ये भारत सरकार की नौकरियां करने लगे। इन्हें मिंटो रोड में सरकारी घर मिले। तब कुमाऊं से कम लोग इधर आए थे। कहते हैं, 1970 तक तो दिल्ली में आने वाले कई गढ़वाली रिटायर होने

के बाद वापस गढ़वाल चले जाते थे, पर उसके बाद जो आए वे इधर के ही होकर रह गए। ये लोग ज्यादा प्रैक्टिकल थे। इन्हें समझ आ गया था कि गांव से भावनात्मक संबंध बनाए रखना तो ठीक हो सकता है, पर वहां वापस जाने का कोई मतलब नहीं है।

ये गढ़वाल के तमाम इलाकों जैसे पौड़ी गढ़वाल, टिहरी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, चमोली वगैरह से दिल्ली आए थे। अब दिल्ली–एनसीआर में इनकी चौथी पीढ़ी चल रही है। इनकी फूड हैबिट भी दिल्ली वालों की तरह ही हो गई है। अब मंडवे की रोटी या दाल भरी रोटी कम ही परिवारों में खाई जाती है। यानी अब खान–पान स्थानीय हो गया है। मिंटो रोड के अलावा लोधी रोड, आईएनए, अलीगंज, सरोजिनी नगर भी भरा होता था गढ़वाली परिवारों से। यहां कांग्रेस उम्मीदवारों के प्रचार के लिए हेमवती नंदन बहुगुणा और नारायण दत्त तिवारी जैसे नेता भी आते रहते थे।

एक बात और, दिल्ली आए देवभूमि वालों ने यहां गढ़वाली नाटक भी खूब खेले। इसका श्रीगणेश 1960 के आसपास हो गया था। ललित मोहन थपलियाल ने कई गढ़वाली नाटक लिखे। उनमें 'खांडू लापता', 'घरजवांई, 'काला राजा' प्रमुख थे। विश्व मोहन बडोला, उमा शंकर चंदोला और उनकी सिंधी मूल की पत्नी सुषमा चंदोला भी बहुत सक्रिय थे। बाद में धीरे–धीरे गढवाली नाटक खेले जाने बंद हो गए। वजहें आर्थिक ही थीं। बहरहाल, आपको राजधानी के पुराने गढ़वाली परिवारों के घरों में मिंटो रोड की धुंधली होती कुछ फोटो जरूर मिल जाएंगी।

अष्टयोग-4900

		5		3	2	
2	35		26		28	6
	7		4	1	6	
	28	4	27		36	4
	2	3		5		
6	35	7	35		38	2
3			1		4	5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है.खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4899 का हल

4	2	1	6	3	5	7
2	27	7	32	4	34	2
6	3	2	4	5	7	1
5	37	6	33	6	29	3
7	5	3	6	1	2	4
3	33	5	31	7	34	5
1	5	4	3	2	7	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग: मुस्लिम कहना गुनाह है पाकिस्तान में

अर्जुन शर्मा। आजकल सीएए को लेकर भारत में हंगामाखेज हालात हैं। हमारे देश के कुछ तथाकथित विद्वान ये समझने में तकलीफ महसूस कर रहे हैं कि पाकस्तिान में गैर मुस्लमानों के साथ भेदभाव हो सकता। कारण वे भारत सरकार के ताजा फैसले का विरोध कर रहे हैं। इस लेख के माध्यम से हमने केवल ये बताने का प्रयास किया है कि वहां अहमदिया मुस्लमानों पर कितने जुल्म हो रहे हैं। ये लेख उस मौके के लिए लिखा गया था जिसमें दिसंबर के आखरी सप्ताह में पंजाब के कादियां कस्बे में अहमदी समुदाय की अंतरराष्ट्रीय मजलिस हुआ करती है। इस बार ये मजलिस रद्द कर दी गई है। शादय अहमदी समुदाय जिसका बहुत बड़ा हिस्सा पाकिस्तान में रहता है वो इस विवादित दौर में खुद को चर्चा में आने से बचाने की कोशिश में है। हाल ही में पाकिस्तान में ईश निंदा कानून के चलते एक इसाई महिला के साथ जिस प्रकार पाकिस्तान के अवाम को भडका कर आतंक मचाया गया। अदालत से बरी होने के बावजूद उस महिला का वहां रह पाना नामुमकिन हो गया है।